B.A. (Part-III) Examination, 2018
हिन्दी साहित्य-तृतीय वर्ष (द्वितीय प्रश्न-पत्र)
For Non-Collegiate Candidates

Time allowed : Three Hours Maximum marks : 100

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिये:-

(क) काल के परिवर्तन की कैसी महिमा है जो अपने साथ ही साथ मानुषी प्रकृति के परिवर्तन पर भी बहुत कुछ असर पैदा कर देता है। वाल्मीकि ने जिन-जिन बातों को अवगुण समझ अपनी कल्पना के प्रधान नायक रामचंद्र में बरकाया था वे ही सब व्यास के समय में गुण हो गईं, जिनकी कविता का मुख्य लक्ष्य यही था कि अपना मान, अपना गौरव, अपना प्रभुत्व जहाँ तक हो सके न जाने पावे। भारत के हर एक प्रसंग का तोड़ अंत में इसी बात पर है।

अथवा

बहुत दूर तक और बहुत काल से पीड़ा पहुँचाते चले आते हुए किसी घोर अत्याचारी का बना रहना ही लोक की क्षमा की सीमा है। इसके आगे क्षमा न दिखाई देगी-नैराश्य, कायरता और शिथिलता ही छाई दिखाई पड़ेगी। ऐसी गहरी उदासी की छाया के बीच आशा, उत्साह और तत्परता की प्रभा जिस क्रोधाग्नि के साथ फूटती दिखाई पड़ेगी, उसके सौन्दर्य का अनुभव सारा लोक करेगा। राम का कालाग्नि-सदृश क्रोध ऐसा ही है। वह सात्विक तेज है; तामस ताप नहीं। 10

(ख) ग्रीक संस्कारों के चश्मे से भारतीय संस्कारों को देखना उतना ही अनुचित है, जितना भारतीय संस्कारों के चश्मे से ग्रीक साहित्य को देखना। दुर्भाग्यवश भारतीय साहित्य को यूरोपियन पंडित ने ऐसे ही देखा है और आधुनिक शिक्षा प्राप्त भारतवासी भी वैसे ही देखने के अभ्यस्त हो गए हैं। आधुनिक भारतीय शिक्षा में भारतीय संस्कारों की अपेक्षा पश्चिमी संस्कार ही अधिक हैं। यह ध्यान में रखने की बात है कि ग्रीक काव्य और ट्रैजडी पर उसी प्रकार ग्रीक पौराणिक कथाओं का प्रभाव है, जिस प्रकार भारतीय नाटकों और काव्यों पर भारतीय पुराणों का।

अथवा

आधुनिक छायावादी काव्य किसी क्रमागत अध्यात्म-पद्धति को लेकर नहीं चलता। नवीन जीवन-प्रगति में ही उसने आत्म सौन्दर्य की झलक देखी है। परम्परित अध्यात्मक प्राय: पुरुष से प्रकृति की ओर प्रवर्तित होता है। एक चेतन केन्द्र से नाना चेतना केन्द्रों की सृष्टि करता है; किंतु छायावादी काव्य प्रकृति की चेतन सत्ता से अनुप्राणित होकर पुरुष या आत्मा के अधिष्ठान में परिणत होता है। इसकी गति प्रकृति से पुरुष की ओर, दृश्य से भाव की ओर होती है और इस दार्शनिक अनुभूति के अनुरूप काव्य वस्तु का चयन करने में छायावादी कवियों ने प्रकृति के अपार क्षेत्र से यथेच्छ सामग्री ग्रहण की है।

(ग) संत साहित्य की प्रबल धारा ने समाज के ऐसे स्तरों को जगाया, जो सबसे पीड़ित थे और संस्कृति से वंचित थे। अछूत और नीच कहलाने वाले लोगों में संतों का जन्म हुआ। इन सब लोगों के लिए न मंदिर में जगह थी, न मस्जिद में। इनका निर्गुणवाद मंदिर-मस्जिद, वेद, पुराण और कुरान के विरुद्ध चुनौती बनकर आया है। वे मंदिर-मस्जिद की सीमाएँ नहीं मानते। भले ही इनका द्वारा उनके लिए बंद हो, वह अपने हृदय में साहब का दर्शन कर लेते हैं।

अथवा

[redacted] सोचते-सोचते लगा कि इस देश की ही नहीं, पूरे विश्व की एक कौशल्या है; जो हर

बारिश में बिखर रही है 'मोरे राम के भीजै मुकुटवा'। मेरी संतान, ऐश्वर्य की अधिकारिणी संतान वन में घूम रही है, उसका मुकुट, उसका ऐश्वर्य भीग रहा मेरे राम वन्य पर लौटेंगे;मेरे राम के सेवक का दुपट्टा भीग रहा है, पटका कमरबंद भीग रहा है, उसका जागरण भीग रहा है, मेरे राम की सहचारिणी सीता का सिंदूर भीग रहा है, उसका अखंड सौभाग्य भीग रहा है, मैं कैसे धीरज धरूँ? 10

(घ) आदिगंत फैली पीली सरसों तुम्हारा आँचल है, नदी की अविराम ध्वनिमय धारा तुम्हारी कटि-मेखला है, जंगल में साँस लेती हुई कच्ची घासों की गंध तुम्हारी देह-गंध है। तुम्हें पाना जीना, जीने के लिए पंचेंद्रिय उत्सव है जिसमें सुमंगली पाठ करता है वही बहुरूपी मन अर्थात छठी इंद्रिय। हम दैन्यग्रस्त हैं, हम हताश हैं, तुम हमें प्रशस्त करो, ललित करो, आवरण-मुक्त और स्वस्थ करो, जिससे हमारे अंदर इतना मनोबल आए कि हम किसी 'याद' के भय या भुलावे में पड़कर सद्यानुभूत-स्वानुभूत सत्य को और विश्वव्यापी जीवन चेतना को कभी भी अस्वीकार न करें।

अथवा

जरा ध्यान से देखें तो हम पाएंगे कि 'प्रासंगिकता' शब्द से ही समय की गंध आती है, समय जो आज है – आज जो हम हैं, हम जो आज हैं– आप कुछ भी कह लें, कोई भी कलाकृति, चाहे वह कितनी ही पुरानी क्यों न हो, समय की अनंत धारा में इस क्षण अटके हुए 'मैं' को कितना आलोकित करती है, उसकी प्रासंगिकता के मूल में यह प्रश्न पूछा जाता है कि क्या कोई कलाकृति अपने में इतनी शक्ति, इतनी सामर्थ्य, इतनी सर्वांगीण संपन्नता रखती है कि अपने समय की विशिष्ट परिस्थितियों से उठकर 'छलांग लगाकर' हमारे समय तक पहुँच पाती है? 10

2. 'भारतीय साहित्य की प्राणशक्ति' निबंध में व्यक्त आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के विचारों को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' निबंध के आधार पर विद्यानिवास मिश्र के निबंधों की भाषा-शैली के स्वरूप और वैशिष्ट्य को उद्घाटित कीजिए। 15

3. 'क्रोध' निबंध के आधार पर आचार्य रामचंद्र शुक्ल की निबंध कला की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए। https://www.uoronline.com

अथवा

'पहला सफेद बाल' निबंध में व्यक्त व्यंग्य जिस जीवन-यथार्थ को प्रकट करता है, उसे विस्तार से समझाइए। 15

4. काव्य में अलंकारों के महत्व को प्रतिपादित करते हुए 'यमक' और 'श्लेष' में सोदाहरण अन्तर स्पष्ट कीजिए।

अथवा

रस की समुचित परिभाषा देते हुए रसावयवों का परिचय दीजिए। 15

5. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए/यथानिर्दिष्ट उत्तर दीजिए–

(क) 'द्रुतविलम्बित' छंद का लक्षण और उदाहरण कीजिए।

अथवा

'दोहा' और 'चौपाई' छंदों में सोदाहरण अंतर स्पष्ट कीजिए। 7½

(ख) काव्य में 'व्यंजना' शब्द शक्ति का महत्व स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'गुण' की उपयुक्त परिभाषा देते हुए प्रमुख काव्य गुणों का परिचय दीजिए। 7½

OOO